धूल भरे हीरे

मकतबा जामिया
लिमिटेड देहली

"धूल-भरे-हीरे"

[सचित्र बालोपयोगी कविता-संग्रह]

ता भरे हीरे

लेखक

अनेक बालोपयोगी पुस्तकों के रचयिता

'साहित्यालंकार' कवि "अशोक" बी० ए० 'विशारद'

सम्पादक—'इन्द्रधनुष' 'कन्या'

'अशोक—निकुन्ज,' नागपुर (मध्यप्रान्त)

लेखक

प्रकाशक

मक्तबा जामिआ लिमिटेड, जामिआ नगर, देहली।

प्रथम संस्करण २०००]   सन १९५०   [मूल्य १)

प्रकाशक
मक्तबा जामिआ,
देहली ।

"तुम वीर बनो, गंभीर बनो ।
धनुवा के तीखे तीर बनो ॥
गुणवान बनो, बलवान बनो ।
"माँ" के सच्चे अभिमान बनो ॥"

—"अशोक" बी॰ए॰

मुद्रकः—
जैयद प्रेस,
देहली

मेरी बात

"धूल-भरे-हीरे" मेरा नवीन बालोपयोगी कविता-संग्रह है। इस संग्रह में बालकों के मनोविज्ञान को ऊपर उठाने वाली विविध विषयों पर लिखी गई कविताएं हैं। इन पद्य—रचनाओं से जहाँ बालकों की मानसिक भूख मिटेगी, वहाँ दूसरी ओर उनका यथेष्ठ मनोरंजन भी होगा। इस संग्रह की अधिकांश कविताएं भारत के सभी बालोपयोगी पत्रों में सादर प्रकाशित हो चुकी हैं। इस संग्रह के परिचय- लेखक भाई श्रीयुत रामदयाल पांडेय, सम्पादक, 'बालक', पटना का भी हृदय से कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने समय निकाल कर इसके सम्बन्ध में दो शब्द लिखने की कृपा की है।

स्वतन्त्र-भारत के 'धूल-भरे-हीरे', इस'धूल-भरे-हीरे' को सादर सप्रेम अपनायेंगे, ऐसी आशा है।

'अशोक-निकुंज' —'अशोक'

नागपुर (मध्य प्रदेश)

३ मार्च, १९४९

प्रकाशक की ओर से........

बहुत समय से हिन्दी में बाल-साहित्य के अभाव का अनुभव किया जा रहा है। इस दिशा में कुछ कार्य किया भी गया है, किन्तु वह पर्याप्त नहीं कहा जा सकता। हमने बाल मनोविज्ञान के ज्ञाता लेखक तथा कवियों की बालोपयोगी रचनायें हिन्दी संसार को भेंट करने का निश्चय किया है। गद्य में हम चार पुस्तकें 'साहस के फल' 'एवरेस्ट की कहानी' 'बिजली की कहानी,' और 'ईमानदारी' प्रस्तुत कर चुके हैं। कविता की यह पुस्तक पाठकों के हाथ में है।

प्रस्तुत संकलन की कविताओं और उनके कवि के विषय में 'परिचय' और 'मेरी बात' में प्रकाश डाला गया है। हमें तो केवल यह कहना है कि इन कविताओं को पढ़ते समय महाकवि बिहारी लाल के इस दोहे का स्मरण हो आता है :—

छुटी न सिसुता की झलक झलक्यौ जोबनु अंग।
दीपति देह दुहूनु मिलि दिपति ताफता रंग ॥

"धूल-भरे-हीरे" में एक तरुण की प्रौढ़ता, भाव प्रवणता और गम्भीरता है किन्तु उसमें इन सब से ऊपर एक वस्तु है 'सिसुता की झलक,' और यही इस संकलन की विशेषता है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि 'ताफता रंग' में रँगी 'तरुण-बालक' की यहसुन्दर कृति तरुण और बालक, दोनों केही हृदय में आदर और प्रेमपूर्ण स्थान प्राप्त करने में अवश्य सफल होगी।

परिचय

श्री 'अशोक' बी० ए० ने हिन्दी बाल-साहित्य के क्षेत्र में आशा की एक उज्जवल किरण के साथ पदार्पण किया है। उनकी एक रचना भी यह विश्वास दिलाने में समर्थ है कि बाल-साहित्य के लिए उनके पास कुछ भेंट है और अच्छी भेंट है। हम उस दिन की प्रतीक्षा करते हैं जब श्री 'अशोक' बाल-साहित्य को सम्पन्नता प्रदान कर हिन्दी भाषी जनता और विशेषतः तरुण जनता के सम्मान के अधिकारी बनेंगे।

श्री 'अशोक' की कविताओं में बाल-साहित्य के तत्व पर्याप्त मात्रा में हैं। बालकों की सरलता, चपलता, ममता, दुराग्रह, संकल्प, शरारत श्रद्धाभक्ति आदि सब कुछ का स्वर इनकी रचनाओं में है। क्यों? इसलिए नहीं कि वे बालक हैं, बल्कि इसलिए कि उनका सहृदय हृदय बालकों के हृदय के समीप सहज ही चला जाता है, उनकी किलकारियों और उनकी चहक को सुनता है और फिर ज्यों का त्यों उन्हें काग़ज पर उतार देता है। बालकों के मानस-क्षितिज पर उतरना सयानों के लिए बड़ा कठिन है, लेकिन श्री 'अशोक' जी इस कठिन काम को बड़ी

सरलता से करते हैं। मालूम होता है कि बच्चों की अनुभूतियों, मनोभावों और आकांक्षाओं को ये सहज ही हृदयंगम कर लेते हैं, लेकिन तारीफ़ तो यह है कि हृदयंगम करने के बाद वे उन्हें फिर, अविकल रूप में, छन्दों और शब्दों में बिखेर देते हैं। फिर भी उनमें एक निखार आ जाता है। बाल-मनोविज्ञान की सांगीतिक अभिव्यक्ति में वे बड़े सफल हैं। छोटे छोटे भाव, छोटे छोटे शब्द, छोटे छोटे छन्द, कहीं भी जटिलता या कठिनता नहीं।

हमें विश्वास है कि बच्चे 'धूल-भरे-हीरे' पाकर उछल पड़ेंगे और बच्चियें भी फूली न समायेंगी! काश! हम भी बालक होते और उनके इस आनन्द में सम्मिलित होते!

'पुस्तक भंडार,'
पटना
दीपावली, २००४ वि०

—रामदयाल पांडेय
सम्पादक 'बालक'

ढूंढो



धूल-भरे-हीरे



धूल–भरे–हीरे कहलाते !
घुटनों के बल सरक सरक कर–
हाथ–पैर में धूल लगाते !!
धूल–भरे–हीरे कहलाते !!!



ठुमुक ठुमुक कर ये चलते हैं,
किलक किलक कर ये हंसते हैं,
रूठ तुरत ही जाते हैं ये–
रो रो कर तब शोर मचाते !
धूल–भरे–हीरे कहलाते !!



तुतली तुतली इनकी बोली !
मानो उसमें मिसरी घोली !!
डाल मोहिनी देते सब पर–
थिरक-थिरक कर नाच दिखाते !
धूल–भरे -हीरे कहलाते !!



Voisey.

धू ल भ रे ही रे ॥ १ ॥

सूरत इनकी अनुपम न्यारी
लगती किसे न वह अति प्यारी !
चूम सभी लेते हैं मुखड़ा,
इन पर सब हैं बलि बलि जाते !
धूल–भरे–हीरे कहलाते !!

जनक–जननि के प्राण–दुलारे !
शशि समसुखद, अलौकिक, न्यारे
ये ही सुन्दर, सरस, मधुरमय–
भारत–माँ के लाल कहाते !
धूल–भरे–हीरे कहलाते !!



वीर बाल ?

हे वीर - बाल हे वीर बाल !
उठ जाग - जाग उठ जाग - जाग
फिर से ले कर में असि-कराल ??
हे वीर - बाल हे वीर - बाल !!!

परवाह न कर तू छोटा है !
तू भारत माँ का ढोटा है !!
हाथों में तेरे "सोटा" है !!!
आँखें हैं तेरी लाल - लाल !
हे वीर - बाल हे वीर - बाल !!

तुझ पर ही आशा भारी है !
मुख देख रही महतारी है !!
हालत उसकी कुछ न्यारी है !!!
माता का कर दे दूर - शाल ?
हे वीर - बाल हे वीर - बाल !!

तू स्वदेश का प्राण - सहारा !
तुझ पर तन - मन - धन - है वारा ।
करदे सब दुख - दूर हमारा !!!
होगा भारत फिर से विशाल !
हे वीर - बाल हे वीर - बाल !!

धूल भ ही रे ॥ ३ ॥

धरती पर अधिकार हमारा !

हम छोटे छोटे बच्चे हैं !
नादान उमर के कच्चे हैं ॥
पर अपने प्रण के सच्चे हैं !!!
'जय--हिन्द' हमारा है नारा !
धरती पर अधिकार हमारा ॥

* * *

आगी पानी से खेलेंगे !
हम दंड वहां भी पेलेंगे ॥
हम नादिरशाही मेटेंगे !!!
है स्वदेश प्राणों से प्यारा !
धरती पर अधिकार हमारा ॥

* * *

इस धरती मां के कण-- कण में !
खेल किया हमने बचपन में ॥
प्यार समाया है तन--मन में !!!
इसमें डूबा प्यार हमारा !
धरती पर अधिकार हमारा ॥

यही हमारी मातृ--भूमि है !
यही हमारी पितृ--भूमि है ॥
यही हमारी भ्रातृ-- भूमि है !!!
इसमें जीवन--सार हमारा !
धरती पर अधिकार हमारा ॥

* * *

देखें, कौन यहां है आता !
है वह कौन क्रूर मद माता ॥
कैसे वह अधिकार जमाता ॥।
हरे प्राण हथियार हमारा !
धरती पर अधिकार हमारा ॥

* * *

जीते जी हम लाज रखेंगे !
इस धरती पर नाज़ करेंगे ॥
हिल मिल कर हम राज करेंगे ॥।
झंडा ऊंचा रहे हमारा ॥
धरती पर अधिकार हमारा ॥

काले काले बादल आओ !

१

काले--काले, नीले-- नीले ।
रंग--बिरंगे औ' कपसीले ॥
धूम धाम से नभ पर छाओ !
काले--काले बादल आओ !!

२

धरती माँ के लाल-- दुलारे !
कृषकों के प्रिय प्राण-- सहारे ॥
उमड़-- घुमड़कर शोर मचाओ !
काले -- काले बादल आओ !!

३

प्यासी तेरी धरती माता !
गर्मी का दुख सहा न जाता !!
जल बरसा कर प्यास बुझाओ !
काले-- काले बादल आओ !!

४

बच्चे, बूढ़े, नर औ, नारी !
जग के जितने भी हैं प्राणी !!
उन्हें सुखी कर मोद मनाओ !
काले-- काले बादल आओ !!

आकाँक्षा !

अम्मा ! मैं बनूं सिपाही ।

मैं मार करूं लासानी ।
हों दुश्मन पानी - पानी ॥
मैं मृत्यु - राह का राही ।
अम्मा ! मैं बनूं सिपाही ॥

जो तुझे सताने आयें ।
जो तुझे डराने आयें ॥
काटूं उनको क्षण - माँही ।
अम्मा मैं बनूं सिपाही ॥

मैं दुख के बन्धन खोलूं ।
हर बार यही मैं बोलूं ॥
है मौत मिली मन चाही ।
अम्मा ! मैं बनूं सिपाही ॥

सुख - शान्ति देश में होवे ।
माँ कभी न दुख से रोवे ॥
है चाह यही मन माँही ।
अम्मा ! मैं बनूं सिपाही ॥

हम हैं वीर

हम हैं वीर !
अति गंभीर ॥
नाम अमर कर जायेंगे !

हम हैं वीर !
धनु के तीर ॥
अरि को मार गिरायेंगे ॥

हम हैं वीर !
सहकर पीर ॥
फिर भी हम मुस्कायेंगे !

हम हैं वीर !
सर के नीर ॥
सबकी प्यास बुझायेंगे ॥



हम हैं वीर !
पर हैं धीर ॥
कभी न हम घबरायेंगे !

हम हैं वीर !
सच्चे वीर ॥
'मां के कष्ट मिटायेंगे !'

क स र त

१

कसरत करने से हे बच्चो—
हृष्ट-पुष्ट तन होता है !
मन सदैव प्रमुदित रहता है—
रोग न कोई होता है ॥

२

जो कुछ खाओ सब पच जाता
अनपच कभी न होता है !
रहती है स्फूर्ति देह में—
कठिन काम भी होता है ॥

३

दौड़ लगाकर, दंड पेल कर—
फिर बैठक खूब लगाओ !
तब तक करते रहो परिश्रम—
जब तक कि न थक तुम जाओ !!

४

समय समय पर तरह तरह के—
खेल खेलते रहो सदा ।
'कसरत' के साथ-साथ ही तुम—
फेरो मुग्दर यदा कदा ॥

गुरु-दक्षिणा

द्रोणाचार्यः—कहो तात तुम कौन हो, मुझे बताओ नाम !
क्यों आये हो तुम यहाँ, है क्या मुझसे काम ?

एकलव्य—भील-पुत्र एकलव्य हूँ, आया यह अनुमान !
हाथ जोड़ विनती करूं, मुझे आप दें ज्ञान ॥

द्रोणाचार्य—तुम अछूत संतान हो, इससे हूँ लाचार !
शिक्षा दे सकता नहीं, इससे अस्वीकार ॥
यहां आर्य-सुत सीखते, विविधविषय का ज्ञान,
तुम्हें सिखाने में यहां, है उनका अपमान ॥
यद्यपि सुत तुम पर मेरा, उनका ही है प्यार ?
किन्तु सिखाने में तुम्हें, बिलकुल हूँ लाचार ॥
होने को आचार्य हूँ, फिर भी उनका दास !
इससे रख सकता नहीं, तुमको अपने पास ॥

एकलव्य— गुरुकुल में भी हो रहा, यह कैसा अन्याय ?

द्रोणाचार्य—बंधन से हूँ बंध चुका, इससे हूँ निरुपाय ॥
जाओ, सीखो शीघ्र ही, अपने मन से ज्ञान ?
पराधीनता है बुरी, मन में लो यह जान !

एकलव्य— तो क्या जाऊं लौटकर, नहीं मिलेगा ज्ञान ?

द्रोणाचार्य—मुश्किल है मेरे लिए, देना तुमको ज्ञान ॥

एकलव्य— जैसी आज्ञा आपकी, है मुझको स्वीकार !
पर इतनी रखना दया, करते रहना प्यार ॥
हुआ शिष्य मैं आपका, आप हुए गुरुराज !
देव ! यही अनुरोध है, सदा बचाना लाज ॥
मैं जाता हूँ लौट कर, लिए आपका ध्यान !
किसी रोज़ संसार में, मुझे मिलेगा मान ॥

(जंगल में)

अर्जुन— बड़ा अचम्भा नाथ यह, हुआ श्वान क्यों मौन ?
किसने उसका मुंह सिया, भला वीर वह कौन ??
अरे ! वही है दिख रहा, वही जंगली वीर !
जिसके कर में है धनुष, और धनुष में तीर ॥
किया कपट गुरुदेव क्यों, हुई आज क्या बात ॥
तुमने तो था यह कहा, "कहीं न तुमसा तात"॥
फिर यह कैसा भेद है, है यह कैसी चाल ?

द्रोणाचार्य—मुझे पता कुछ भी नहीं, क्या बतलाऊं हाल ??
आओ, ले जाओ उसे, पूछूंगा मैं नाम !

एकलव्य— (सामने आकर)
नाथ ! तुम्हारा दास मैं, एकलव्य है नाम !

द्रोणाचार्य—सच सच कहना तात तुम, किससे पाया ज्ञान ?

एकलव्य— सीखा सब कुछ आपसे, मिला आप से ज्ञान ॥

द्रोणाचार्य—नहीं, नहीं, यह झूठ है, मिथ्या है अभिमान !

एकलव्य— इन चरणों के पुण्य से, मिला मुझे सन्मान ॥
पत्थर की प्रतिमा बनी, देव ,नाथ, आचार्य !
उससे सीख ज्ञान अरु, धनुष-तीर का कार्य ॥

द्रोणाचार्य—यदि तू मेरा शिष्य है, चुका गुरू का भार !

एकलव्य— जो आज्ञा हो नाथ की, सेवक है तैयार ॥

द्रोणाचार्य—काट अंगूठा दाहिना, दे दे यह उपहार !

एकलव्य— (दाहिना अंगूठा काट कर)
नाथ ! दया कर लीजिए, करें इसे स्वीकार ॥

द्रोणाचार्य—धन्य, धन्य तू धन्य है, धन्य भील-संतान !
नीच वंश में जन्म ले, कारज किया महान ॥
जब तक यह संसार है, जब तक रवि-आकाश !
तब तब तेरी कीर्ति का, फैले सदा प्रकाश ॥

—:—

सीखो ?

कोयल से तुम सीखो बच्चो–
मीठे वचन सुनाना।
मीठे–मीठे– गीत सुनाकर—
सबसे चित्त चुराना ॥
तोते से तुम सीखो शिशुओ—
'राम–नाम' गुण गाना ।
फूलों से नित हँसना सीखो —
भौंरों से मंडराना ॥
तरुवर से तुम सीखो बच्चो—
औरों को जल देना ।
नर का तन पाकर तुम सीखो—
सुखमय देश बनाना ।
दीन दुखी की सेवा से प्रिय
कभी न चित्त चुराना ॥

"छोटा भैया अरुण कुमार"

१

भूले में वह भूला करता !
हँस हँस कर बातें है करता ॥
गोरा गोरा है सुकुमार !
छोटा भैया अरुण कुमार ॥

२

आँखें उसकी काली-काली !
बातें उसकी बड़ी निराली ॥
टपकाता रहता है लार !
छोटा भैया अरुण कुमार ॥

३

हाथी, घोड़ा, मोटर-गाड़ी !
कुत्ता, बकरी, गुड़िया-रानी ॥
रखे हुए हैं गुड्डे चार !
छोटा भैया अरुण कुमार ॥

४

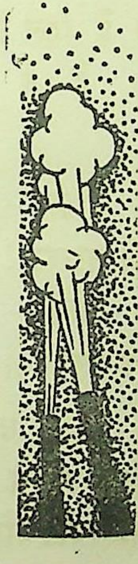
पैरों में पैंजनिया बाजे !
रुनझुन, रुनझुन, रुनझुन बाजे ॥
सब करते हैं उसे दुलार !
छोटा भैया अरुण कुमार ॥

५

घुटनों के बल है वह चलता !
घर-भर में वह घूमा करता ॥
चूम-चूम माँ करती प्यार !
छोटा भैया अरुण कुमार ॥

६

यह छोटा सा दीपक मेरा !
करता है यह दूर अँधेरा ॥
चिरंजीव हो अरुण कुमार !
छोटा भैया अरुण कुमार ॥



भाई बहिन

१

कितनी सुन्दर लगती देखो—
भाई और बहिन की जोड़ी !
इनकी सुन्दरता का वर्णन—
है कर सका न कोई थोड़ी ॥

२

बहिन 'अन्नपूर्णा' है सुन्दर—
'अरुण कुमार' चाँद सा भाई !
रहते हैं हिल मिल कर दोनों—
खाते हैं वे दूध मलाई ॥

३

बहिन 'अन्नपूर्णा' है सीधी—
पर है 'अरुण' बड़ा ही नटखट !
यहाँ-वहाँ की सारी चीजें—
कर देता है वह 'उलट-पुलट' ॥

४

जो कुछ माँ से मिल जाता है—
दोनों बाँट-बाँट कर खाते !

जरा-जरा सी बातों पर वे—
कभी न रोते, धूम-मचाते ॥

५

अपने अपने सभी खिलौने—
एक साथ ले खेला करते !
टूट-फूट जाने पर दोनों—
कभी न 'मैं-मैं-तू-तू' करते ॥

६

जब तक अजर अमर शिव ब्रह्मा—
जब तक है गंगा की धारा !
तब तक बना रहे इस जग में—
भाई सदा बहिन का प्यारा ॥



रक्षा-बंधन

भैया! आज बंधालो राखी!

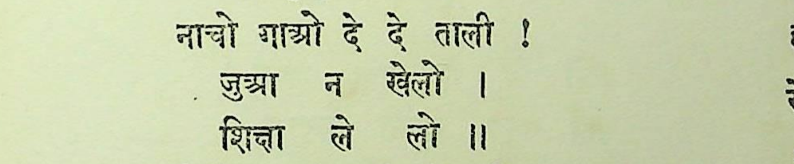
आया है अब 'रक्षा-बंधन'!
गूंज रहा अवनी का कण-कण।।
हर्ष नाद होता है क्षण-क्षण!!!
बाँधूंगी दे सबको साखी!
भैया! आज बंधा लो राखी!!

इसमें भगिनी का प्यार भरा!
भाई का अमिट दुलार भरा।।
जीवन का सारा सार भरा!!!
बाँधूंगी मैं कस कर राखी!
भैया! आज बंधा लो राखी।।

राखी पाकर भूल न जाना!
रक्षा से फिर जी न चुराना।।
बहिनों की फिर लाज बचाना!!!
युग-युग तक मैं बाँधूं राखी!
भैया! आज बंधा लो राखी।।

दीप सजाओ !

दीप सजाओ ।
मोद मनाओ ॥
लो अब आई है दीवाली ।
करो सफाई !
और पुताई ॥
रहें न दीवालें अब काली ॥
कूड़ा– कर्कट ।
फेंको झट पट ॥
उसमें, जो बहती है नाली ।
छोड़ पटाके ॥
धक्के खाके ॥
मुख से कभी न बकना गाली ।
लक्ष्मी -- पूजन ।
करो मुदित-- मन ॥
नाचो गाओ दे दे ताली !
जुआ न खेलो ।
शिक्षा ले लो ॥
होगी सच्ची तभी दिवाली !



अगर कहीं मैं होता फूल

१

उपवन की डाली में खिलता !
भौंरों का मन मोहित करता ॥
मंदिर में देवों पर चढ़ता !!!
होता मैं सबके अनुकूल !
अगर कहीं मैं होता फूल ॥

२

गर्मी मेरी देह जलाती !
वर्षा मेरी प्यास बुझाती ॥
देह ठंड पाकर कंप जाती !!!
मैं न किसी को होता शूल !
अगर कहीं मैं होता फूल ॥

३

हारों में मैं गूथा जाता !
वहाँ महक अपनी फैलाता ॥
सबके बड़े काम मैं आता !!!
करता कभी न कुछ भी भूल ।
अगर कहीं मैं होता फूल ॥

४

माली मुझे तोड़ ले जाता !
किसी देव पर मुझे चढ़ाता !!
तभी मोक्ष मुझ को मिल जाता !!!
मिलता मुझे तभी सुख-मूल !
अगर कहीं मैं होता फूल ॥



रंग बिरंगी प्यारी तितली

१

रंग बिरंगी प्यारी तितली
आओ पास हमारे आओ ?
चंचल, कोमल, न्यारी तितली
हमको अपने पास बुलाओ ??

२

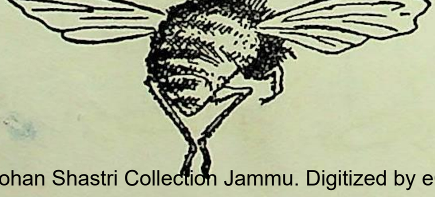
पंख तुम्हारे रंग-बिरंगे—
कहो कि क्यों है तितली रानी।
या कि किसी ने इन पंखों में—
फेरा है सोने का पानी॥

३

कभी हवा में उड़ जाती हो—
कभी बाग में इठलाती हो।
हम भी सुनें कि कारण क्या है
जो फूली नहीं समाती हो ??

४

ठहरो तितली रानी ठहरो
एक बात बतलाती जाओ ?
फूलों का रस क्यों पीती हो—
इसका भेद बताती जाओ ??



स्वागत है ऋतुराज तुम्हारा !

१

खिलीं आज कलियां मतवाली !
उनमें तुमने भर दी लाली ॥
सुख से देख रहा है माली !!!
गा रहा गीत प्यारा–प्यारा !
स्वागत है ऋतुराज तुम्हारा ॥

२

तुम क्या आये सब कुछ आया !
धरती पर स्वर्ग उतर आया ॥
रूप तुम्हारा सबको भाया !!!
है सौन्दर्य तुम्हारा न्यारा !
स्वागत है ऋतुराज तुम्हारा !!

३

खिले पुष्प पौधे तरु सारे ।
मिले आज़ वे जो थे न्यारे ॥
सचमुच तुम हो कितने प्यारे !!!
धरती पर अधिकार तुम्हारा ।
स्वागत है ऋतुराज तुम्हारा ॥

४

सभी तुम्हारा यश हैं गाते !
पत्र-पुष्प, तरु शीश झुकाते ॥
जड़-चेतन सब मोद मनाते ।॥
'स्वागत ! स्वागत' है यह नारा !
स्वागत है ऋतुराज तुम्हारा ॥

झिलमिल तारे

१

झिलमिल तारे, झिलमिल तारे !
लगते हो क्यों इतने प्यारे !!
रोज सवेरे क्यों छिप जाते ?
और रात को क्यों उग आते ??

२

छोटे बड़े अनोखे तारे !
रहते हो क्यों हमसे न्यारे ॥
दूर कहाँ है वास तुम्हारा !
तुमसे है कुछ काम हमारा ॥

३

जग को तुम प्रकाश हो देते !
बदले में न कभी कुछ लेते ॥
तुम कितने हो परोपकारी !
धन्य तुम्हारी महिमा न्यारी ॥

४

कहो चाँद से क्या डरते हो ?
झिलमिल झिलमिल जो करते हो ॥
यदि डरते हो तो बतलाओ !
मुझ से अब तुम मत शरमाओ ॥

५

जियो सदा ऐ झिलमिल तारे !
बने रहो तुम सबके प्यारे ॥
नित्य रात को रहो चमकते ।
रहो चाँद के साथ दमकते ॥



चंदा - मामा !

१

चंदा मामा आये हैं ।
खेल-खिलौना लाये हैं ॥
नभ में दिया जलाये हैं ।
रजत चांदनी लाये हैं ॥

२

चंदा मामा हँसते हैं ।
देखो खूब किलकते हैं ॥
रात-रात भर जगते हैं ।
कितने अच्छे लगते हैं ॥

३

चंदा मामा डरते हैं ।
बदली में वे छिपते हैं ॥
तारों के वे स्वामी हैं ।
पर न जरा अभिमानी हैं ॥

४

चंदा मामा न्यारे हैं ।
पर सबको वे प्यारे हैं ॥
चंदा मामा राजा हैं ।
खाते मीठा खाजा हैं ॥

५

चंदा मामा कहते हैं ।
'जो न किसी सेजलते हैं ॥
वे प्यारे बन जाते हैं ।
'मन मोहन' कहलाते हैं ॥'

फूल

कितने सुन्दर !
उपमा के घर !!
लगते हो तुम प्यारे फूल !
कितने अच्छे !
दिखते अच्छे !!
हर लेते तुम सबके शूल !!
रंग——बिरंगे !
हो बहु रंगे !!
तुम हो प्रिय ! शोभा के मूल !!!
छैल——छबीले !
रंग——रंगीले !!
उगते तुम सरिता के कूल !
कितने पावन !
मन——हरपावन !!
चढ़ते देवों पर तुम फूल !!
दे दो जीवन !
भर दो कण——कण !!
बच्चों को होते अनुकूल !!!

चिड़िया-रानी

(१)

आओ चिड़िया रानी आओ !
मुझसे अपना मन बहलाओ !!
बोलो तो तुम क्या खाती हो ?
दाने चोंच में क्या लाती हो ??

(२)

दूध खिलाऊँगा मैं तुमको !!
भात खिलाऊँगा मैं तुमको !!
नई नई मैं चीजें दूंगा !
बदले में न कभी कुछ लूँगा !!

(३)

तुमने नीड़ कहाँ है छाया ?
किस तरुवर को महल बनाया !!
चूँ-चूँ-चूँ-चूँ करती रहना !
मेरे घर में उड़ती फिरना !!

(४)

फूलों का रमणीक बगीचा !
हो जिसमें रंगीन गलीचा !!
ऐसा बाग़ लगाऊँगा मैं !
दाना तुझे खिलाऊँगा मैं !!

"चालाक लोमड़ी !"

(१)

वन-राजा वृद्ध हुए जब--
तब मन में पछताये !
कैसे भूख मिटेगी मेरी--
यही जान घबराये ॥

(२)

"हैं बीमार तुम्हारे राजा—
बिल्ली से कहलाया !
"तुम्हें देखने को उत्सुक हैं--"
यह संदेश पठाया ॥

(३)

मिली खबर जब वन-पशुओं को—
एक-एक कर धाये !
जाते थे सचमुच में वे, पर--
लौट न वे फिर आये ॥

(४)

चतुर लोमड़ी चली देखने—
मन ही मन घबराती !
"राजा जी बीमार बहुत हैं--"
बात न मन में आती ॥

(५)

सिंह के पास गये थे जो पशु—
वे न लौट पाये थे !
पद-चिन्ह यही बतलाते थे—
माँद--तलक आये थे ॥

(६)

समझ गई सब भेद लोमड़ी—
पहुँच वहाँ यह बोली ।
"कैसी है बीमारी भैया---"
सिंह ने आँखें खोली ॥

(७)

देख लोमड़ी को सिंह बोला--
"आओ, भीतर आओ !"
कहा लोमड़ी ने तब--- "भैया
तुम ही मौज--उड़ाओ !!

८

भगी लोमड़ी तुरत वहाँ से--
सबको भेद बताया !
फिर न गया कोई, तब सिंह भी--
रो रोकर पछताया ॥

(९)

मरा, भूख से तड़फ--तड़फ कर--
धोखे का फल पाया !
बच्चो धोखा देने वाला--
इसी तरह पछताया ॥

अंगारों पर चलना सीखो ?

१

चाहे छाया हो अँधियारा !
छूट गया हो अगर सहारा ॥
मंजिल अगर दूर है तौभी—
हिम्मत को वश करना सीखो ?
अंगारों पर चलना सीखो ??

२

राह सरल हो या दुर्गम हो !
चलो कि जब तक दम में दम हो ॥
बढ़ा चुके पग एक बार तो—
पीछे को मत हटना सीखो ?
अंगारों पर चलना सीखो ??

३

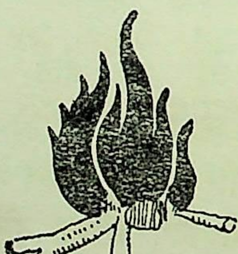
कर्मवीर जो नर होते हैं।
दुख में कभी न ये रोते हैं॥
उनसा वीर बनो तुम जग में—
दुख में भी नित हँसना सीखो।
अंगारों पर चलना सीखो ??

४

शूलों को भी फूल बनाओ !
दुश्मन को भी मित्र बनाओ ॥
स्वाभिमान के लिए सभी से—
आगे बढ़ कर लड़ना सीखो ?
अंगारों पर चलना सीखो ??

५

अपने प्रण पर अटल रहो तुम !
संकट में भी अटल रहो तुम ॥
'मां' की लाज न जाने पाये—
देश-धर्म हित मरना सीखो ?
अंगारों पर चलना सीखो ??



आँधी आई !

१

आँधी आई-- आँधी आई !
धूम धाम से आँधी आई ॥
मोटे-- मोटे झाड़ गिराये !
देखो घर के टीन उड़ाये ॥
छप्पर के खपरैल ढहाये !
पेड़ों से फल--फूल गिराये ॥
अपने साथ धूल भी लाई !
आंधी आई- आंधी आई ॥
धूम धाम से आंधी आई ॥

२

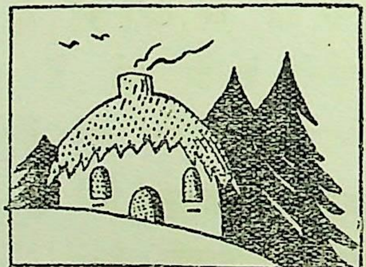
छप्पर उड़ कर कहीं पड़े हैं !
खपरैलों के ढेर पड़े हैं ॥
चौखट और किवाड़ लड़े हैं ।
जहां--तहां फल--फूल गिरे हैं ॥
सबने हाहाकार मचाई !
आंधी आई, आंधी आई ॥

३

चौपाये सब भाग रहे हैं ।
भय से सारे कांप रहे हैं ॥
शरण सभी से मांग रहे हैं ।
सब अपने मुख ढांक रहे हैं ॥
जीव–जन्तु की हुई सफाई ।
आंधी आई, आंधी आई ॥

४

चारों तरफ अँधेरा छाया !
सूरज ने मुख आज छिपाया ॥
बच्चों ने भी शोर मचाया ।
समझ न पड़ती है यह माया ॥
आंधी है सबको दुखदाई ।
आंधी आई, आंधी आई ॥
धूमधाम से आंधी आई ॥



लो ! देखो अब हुआ सवेरा

१

सूरज ने अब खोली आंखें !
पंछी उड़े खोल कर पांखें ॥
दुश्मन सा छिप गया अंधेरा !
लो देखो अब हुआ सवेरा ॥

२

फैल गई है धूप सुनहली ।
जो लगती है अत्यन्त भली ॥
चिड़ियों ने तज दिया बसेरा !
लो देखो अब हुआ सवेरा ॥

३

काँव काँव कौवे चिल्लाते ।
पर फैला कर उड़ते जाते ॥
फिर भी आलस ने क्यों घेरा ।
लो देखो अब हुआ सवेरा ॥

४

उठो लाल, अब आंखें खोलो ।
उठो उठो जल्दी मुंह धोलो ॥
तू है राजा बेटा मेरा ।
लो देखो अब हुआ सवेरा ॥

५

जो लड़के जल्दी उठ जाते ।
प्रभु के चरणों में झुक जाते ॥
पार उन्हीं का लगता बेड़ा ।
लो देखो अब हुआ सवेरा ।



फुग्गे वाला ।

(१)

देखो फुग्गे वाला आया !
रंग—बिरंगे फुग्गे लाया !!
पीले, नीले, लाल, हरे हैं !
आसमान से रंग भरे हैं !!

(२)

फूँक-फूँक कर उसे बढ़ाता !
देखो, फुग्गा बड़ा दिखाता !!
दो पैसे में फुग्गा आता !
नये—नये फुग्गे वह लाता !!

(४)

सस्ते लगा दिए हैं फुग्गे !
दो दो पैसे के हैं फुग्गे !!
लूट लगा दी उसने भारी !
सस्ती कर दी कीमत सारी !!

(४)

ले लो मुन्ना, ले लो राजा !
खा लो दूध मिठाई, खाजा !!
फूकोगे जब बड़े जोर से !
फूटेगा तब बड़े शोर से !!

फेरी वाला

हर माल मिलेगा दो आना !
हर चीज खरीदो दो आना !!
देखो, यह छोटी सी मोटर !
सरपट भगती जाती सर-सर !!
चाबी बजती उस की कर-कर !!!

लो जल्दी, मत धूम मचाना !
हर माल मिलेगा दो आना !
हर चीज खरीदो दो आना !!

छोटी सी यह गुड़िया-रानी !
करती नहीं कभी शैतानी !!
बातों में है सबकी नानी !!!

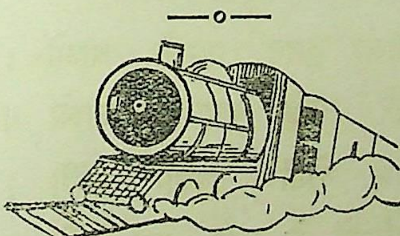
उसको अपने पास बुलाना !
हर माल मिलेगा दो आना !
हर चीज खरीदो दो आना !
लकड़ी की यह छोटी नैया !
नाचा करती - ताता थैया !!
उस पर चढ़ते अच्छे भैया !!!

लो, जेब टटोलो, दो आना !
हर माल मिलेगा दो आना ।
हर चीज खरीदो दो आना ॥

यह देखो कान्हा की मुरली !
बजती है रस घुली - घुली ॥
आवाज भरी है खुली - खुली !!!
इसे बजाते नानी - नाना ।
हर माल मिलेगा दो आना ॥
हर चीज खरीदो दो आना !!!

देखो रेल, यह लम्बी रेल !
अब जाती है, कलकत्ते, रेल ॥
होगी अब इसमें रेल - पेल !!!
बाबू ! इसमें चढ़ते जाना !
हर माल मिलेगा दो आना ॥
हर चीज खरीदो दो आना ॥।

—o—



जुगनू से ?

(१)

जुगनू कहो, कहाँ तुम जाते ?
क्यों न हमें कुछ बात बताते ?
रूप तुम्हारा है कुछ न्यारा ।
फिर भी यह लगता है प्यरा ॥

(२)

चाहे छाया हो अंधियारा ।
हो न सूझता, दूर किनारा ॥
फिर भी तुम उड़ते रहते हो ।
आलोक दिखाते रहते हो ॥

(३)

आओ जुगनू, आओ, आओ ।
मेरे साथी तुम बन जाओ ॥
हम दोनों उपकार करेंगे ।
दुखियों के दुःख भार हरेंगे ॥

प्रार्थना

करुणा-श्रोत बहा दो भगवन !

हम हैं छोटे छोटे बालक !
तुम कहलाते सबके पालक !
भरदो हममें निज-सा जीवन !
करुणा-श्रोत बहा दो भगवन ॥

त्यागी-धीर, सुधीर कहाकर ।
देश- भक्त, बलवीर कहाकर ॥
प्रतिदिन करें तुम्हारा अर्चन ।
करुणा- श्रोत बहा दो भगवन ॥

दीन-दुखी को हम अपनायें ।
भारत-माँ को सुखी बनायें ॥
तिलक, जवाहर, गाँधी से बन ।
करुणा-श्रोत बहा दो भगवन ॥

—:—

अभिलाषा

भगवन! मुझे बना दो कोयल,
वीरों के गुण-गान करूं।
प्रभो! बना दो पथ की छाया—
पथिकों का सम्मान करूं॥
प्रभुवर! मुझे बना दो "लक्ष्मी"—
झाँसी की फिर शान रखूं।
भगवन! मुझे बना दो 'दुर्गा'—
भक्तों की मैं आन रखूँ॥
हे प्रभु! मुझे बना दो 'कमला'—
भारत-हित बलि-बलि जाऊं॥
अधिकारों के लिये लडूँ मैं —
दुख में भी मैं मुस्काऊँ॥



प्रभु ! ऐसी शक्ति प्रदान करो ?

देश-प्रेम पर मरना सीखें !
देश–धर्म–हित लड़ना सीखें ॥
दुखियों के दुख हरना सीखें !!!
"लक्ष्मी" सा साहस दान करो ?
प्रभु ! ऐसी शक्ति प्रदान करो ??

हम होवें—तारा पाँचाली ।
सीता–गिरिजा सी सतवाली ॥
मीरा सी हों प्रभु–मतवाली !!!
कुछ तो हम पर भी ध्यान करो ?
प्रभु ! ऐसी शक्ति प्रदान करो ??

कस्तूरी, कमला बन जायें !
सरोजनी, *विजया, कहलायें ॥
जन्मभूमि हित बलि-बलि जायें !!!
हम सबके उर में ज्ञान–भरो ?
प्रभु ! ऐसी शक्ति प्रदान करो ??

—–—o—–—

*विजया—विजय लक्ष्मी पंडित

निमंत्रण

रूठे भैया 'राम' पधारो ?
आज तुम्हारी कितनी बहिनें,
दरिद्रता का बाना पहिने ॥
छोड़ गरुण-वाहन अब दौड़ो–
जल्दी उनके कष्ट- निवारो ?
रूठे भैया 'राम' पधारो ??
दुख-अशाँति का नाम मिटा दो !
सुखद शांति की धार बहा दो ॥
दुश्मन बने हमारा, उसको––
चक्र–सुदर्शन से संहारो ?
रूठे भैया 'राम' पधारो ??
मेरे भैया, मेरे भैया !
टेर रही है तुमको मैया ॥
आओ जल्दी देर करो मत,
अपनी माँ को शीघ्र पुकारो ?
रूठे भैया 'राम' पधारो ??

—:—

व र दा न

(१)

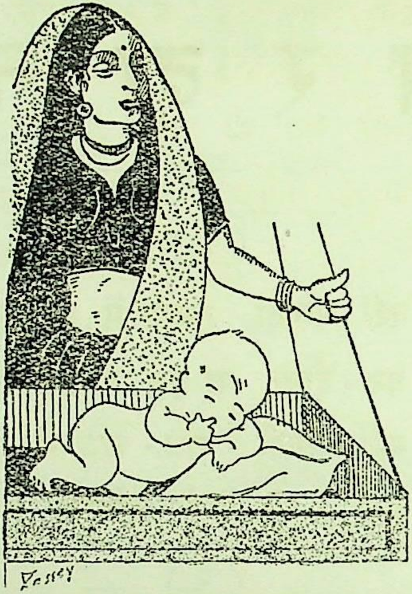
नहीं माँगता तुमसे मैं प्रभु !
धन - दौलत या कुछ सन्मान ।
नहीं माँगता - राज - काज में -
कभी न उर में हो अभिमान ॥

(२)

चाह नहीं जग की विभूति से -
तीन लोक का पाऊँ मान ।
चाह नहीं मैं अमर बनूँ प्रभु -
चाह न पाऊँ झूठी शान ॥

(३)

चाह यही है इस जीवन में -
कभी न हो माँ का अपमान ।
सदा सुखी हो भारत मेरा -
प्रभो ! यही दे दो वरदान ॥



आ जा निंदिया

आ जा निंदिया, प्यारी आ जा !
आ जा मैं बलिहारी आ जा ॥

थपकी दे दे तुझे सुलाऊँ !
मीठे मीठे गीत सुनाऊँ ॥

सो जा, सो जा मेरे राजा !
आ जा निंदिया, प्यारी आ जा ॥
आ जा मैं बलिहारी आ जा ॥।

मुझे मिला है एक खिलौना !
जो है मेरा प्यारा छौना ॥
इससे मन की बात बता जा !
आ जा निंदिया, प्यारी आ जा !
आ जा मैं बलिहारी आ जा ॥
धीरे, धीरे, धीरे, आना !
मेरे मुन्ना को न जगाना ॥
दूध-बतासा लेकर आ जा !
आ जा निंदिया, प्यारी आ जा !
आ जा मैं बलिहारी आ जा ॥
सोने--चाँदी का है पलका !
तकिया बिस्तर है मखमल का ॥
मोती--मूँगे लेकर आ जा !
आ जा निंदिया प्यारी आ जा ॥
आ जा मैं बलिहारी आ जा !!!
रोज रात को आना रानी !
और सुनाना नई कहानी ॥
आ जा, आ जा, मन बहला जा !
आ जा निंदिया, प्यारी आ जा ।
आ जा मैं बलिहारी आ जा ॥

——o——

उन्नति पथ पर बढ़ते जाओ !

१

चाहे छाया हो अँधियारा ।
बरसे जल की मूसलधारा ॥
कहीं न कोई मिले सहारा !!!
जीवन-रण में लड़ते जाओ ?
उन्नति पथ पर बढ़ते जाओ ??

२

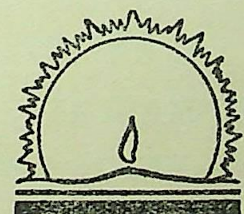
चाहे कितनी आफत आवे ।
लाखों ही बाधाएं आयें ॥
सिर पर दुख के घन-घिर जायें !!
फूंक-फूंक पग रखते जाओ ?
उन्नति-पथ पर बढ़ते जाओ ??

३

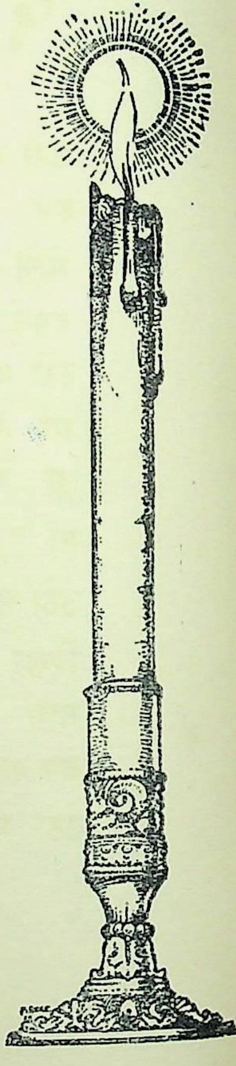
प्राण हथेली पर ले अपने !
जो स्वदेश--हित जाते मरने ॥
अपनी माँ का सब दुख हरने !!!
उनकी पूजा करते जाओ ?
उन्नति पथ पर बढ़ते जाओ ??

दीप दान

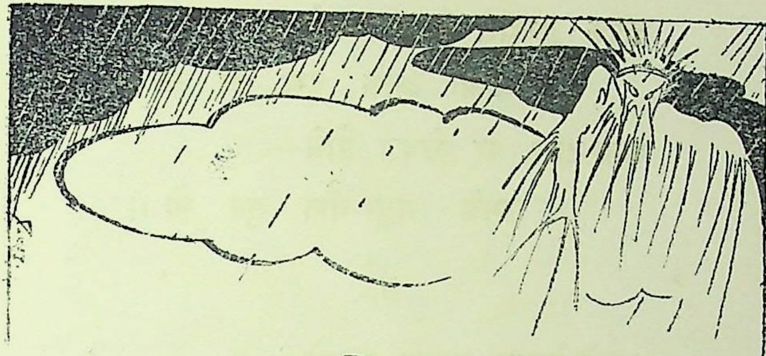
उठो माँ ! दीपक – दान करो !
हम हैं तेरे शिशु नादान !
भोले -- भाले हैं अनजान !!
हमको फिर से सज्ञान करो !
उठो माँ ! दीपक - दान करो !!
आ गई फिर से दीवाली !
छा गई जग में उजियाली !!
माँ ! हम सबके अज्ञान हरो ?
उठो माँ ! दीपक--दान करो !!
दिखा दो बिजली सी ताकत !
मचा दो एक नई--आफत !!
नव-भारत में नव--प्राण भरो ?
उठो माँ ! दीपक--दान करो !!



मां ! मैं अगर दिया बन पाता !



रोज रात को जलता रहता ।
घर--भर में मैं प्रकाश करता ॥
दूर - अंधेरा भगता - फिरता !!!
सबके मन को अति हरषाता ।
माँ ! मैं अगर दिया बन जाता !!
मुन्नी मुझको रोज जलाती ।
बड़े प्रेम से मुझे सजाती ॥
फिर घर भर में मुझे घुमाती !!!
मैं सब का प्यारा बन जाता ।
माँ ! मैं अगर दिया बन पाता ॥
मेरे पास पतंगे आते ।
मुझ पर जलकर मर मिट जाते ॥
मुझको अपना प्रेम दिखाते !!!
मैं परोपकारी कहलाता !
माँ ! मैं अगर दिया बन पाता ॥



सावन के बादल

नील-गगन में उमड़-घुमड़ कर
छाये 'सावन के बादल' !
कुछ श्वेत रंग, कुछ श्याम-रंग—
भर लाये हैं जल ही जल ॥

२

आओ बादल, आओ आओ—
सूखे खेतों पर बरसो ।
फूलों, डालों, वन-उपवन पर—
सूखी धरती पर बरसो ॥

३

कृषक तुम्हारा स्वागत करते—
आओ उनके दुख हर लो।
आम्र-डाल पर कोयल बोले—
उसके मधुर-गीत सुन लो॥

४

आओ बादल, आओ, आओ—
ताल-तलैया पर बरसो।
कुएं, नदी, सर-सरवर सब पर—
उमड़-घुमड़ बरसो—बरसो॥

५

धरती पर तुम इतना बरसो—
रह न जाय कोई प्यासा।
सबको 'सावन' सा तुम कर दो—
भर दो कण-कण में आशा॥

—:—

मैं

मैं पहाड़ को फूँक उड़ाऊँ !
तब भारत का शिशु कहलाऊँ ॥
मैं काँटों को फूल बनाऊँ !
मैं पर्वत को धूल बनाऊँ ॥
सारे जग के दुश्मन को भी—
मैं अपने अनुकूल बनाऊँ !
मैं पहाड़ को फूंक उड़ाऊँ ॥
तब भारत का शिशु कहलाऊँ ॥
मैं पत्थर पर बाग लगा दूं !
मैं पानी में आग लगा दूं ॥
मैं नभ के चांद-सितारों को—
क्षण भर में पृथ्वी पर लाऊँ !
मैं पहाड़ को फूंक उड़ाऊँ ॥
तब भारत का शिशु कहलाऊँ ॥
एक श्वास में प्रलय मचाऊँ ।
पलभर में तूफ़ान मिटाऊँ ॥
स्वर्ग उतर आये पृथ्वी पर—
ऐसी अपनी शक्ति लगाऊं ।
मैं पहाड़ को फूँक उड़ाऊँ !
तब भारत का शिशु कहलाऊँ ॥

—o—

झाँसी वाली रानी !

(१)

जीजी ! आज सुनादे मुझको—
फिर जोशीली वही कहानी !
जिसने भीषण युद्ध किया था—
जो थी झाँसी वाली रानी ॥

(२)

जीजी बोली—'सुन ले कमला'—
झाँसी की थी—लक्ष्मी-बाई !
सन सत्तावन में गरजी थी—
अरि पर बिजली बनकर छाई ॥

(३)

बचपन में सीखा था उसने—
तीर - धनुष तलवार चलानी !
घोड़े पर चढ़ना सीखा था—
तेगों पर झट तेग चलानी ॥

(४)

जीते जी मैं कभी न दूँगी—
अपना झाँसी देश निराला !
माँगेगा जो कोई मुझसे--
कर दूँगी उसका मुख काला ॥

(५)

इतने पर भी जब दुश्मन ने--
जबरन झाँसी लेना चाहा !
ऐसी मार - काट की उसने--
दुश्मन बोल उठे तब--'हा हा' ॥

(६)

कोई नहीं अमर है जग में—
केवल नाम शेष रह जाता !
रानी जीवित नहीं विश्व में—
फिर भी जग है शीश-झुकाता ॥

"बापू के बिना....?"

आज बापू के बिना संसार सूना हो गया है !
याद आता वह अशुभ दिन कि कलेजा मुँह को आता !
आँसुओं में डूब जाता और कुछ बोला न जाता ॥
जल रहा था जो कि दीपक हाय वह यों बुझ गया है !
आज बापू के बिना संसार सूना हो गया है ॥
आज चारों ओर तो बस है अँधेरा ही अंधेरा !
इस अँधेरे में हमें दिखता नहीं अपना बसेरा ॥
आज हमसे ही हमारा हाय सब कुछ खो गया है !
आज बापू के बिना संसार सूना हो गया है ॥
अब कहाँ सुन पायेंगे प्रेम से परिपूर्ण वाणी।
शेष ही अब रह गई है, दुख भरी केवल कहानी ॥
क्या कहूँ उस नीच को जो कष्ट यह सब बो गया है।
आज बापू के बिना संसार सूना हो गया है ॥
मर गये बापू मगर जग में अमर वे हो गये हैं।
कर्मवीरों की तरह वे नाम जग में कर गये हैं ॥
किन्तु बापू के बिना दिखती नहीं ममता-दया है।
आज बापू के बिना संसार सूना हो गया है ॥

——०——

वह देश कौनसा है ?

(१)

जहाँ हिमालय खड़ा निडर है !
पद-तल पर फैला सागर है !!
कल-कल बहतीं यमुना गंगा !
अटल खड़ा है 'कंचन गंगा' !!
वह देश कौन सा है ?

(२)

छै प्रकार की ऋतुएं होतीं ।
मिलते जहाँ अनोखे मोती ॥
प्रकृति बदलती जहाँ रंग है ॥
सत्पुरुषों का जहाँ संग है ॥
वह देश कौन सा है ??

(३)

जहाँ पपीहा शोर मचाते !
चातक, कोयल, मोर लखाते ॥

रत्नों का भण्डार जहाँ है ।
औषधियों का द्वार जहाँ है ॥
वह देश कौन सा है ?

(४)

जहाँ कृष्ण, श्रीराम हुए थे !
जहाँ लखन, बलराम हुए थे ॥
जहाँ भीम से महावीर थे !
धर्मराज सम नीति-धीर थे ॥
वह देश कौन सा है ?

(५)

है वह भारत देश दुलारा !
तीन लोक से है जो न्यारा ॥
लगता है जो प्यारा प्यारा !
जिस पर है अधिकार हमारा ॥
वह देश भारत वर्ष है ।

मिल-जुल कर हम देश संवारें ?

— १ —

प्यारा भारत देश हमारा !
जो है प्राणों से भी प्यारा !!
अर्पण कर दें तन-मन सारा !!!
धरती पर हम स्वर्ग उतारें !
मिल--जुलकर हम देश संवारें !!

— २ —

यहीं हमारा ताजमहल है !
यहीं हिमालय खड़ा अटल है !!
यहीं सतपुड़ा--विन्ध्याचल है !!!
हरे भरे वन-उपवन न्यारे !
मिल जुलकर हम देश सँवारें ॥

— ३ —

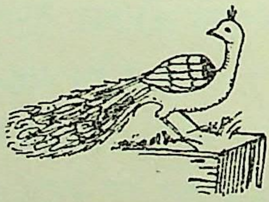
इसे बनायें हम नन्दन-वन !
तरसें आने को नित सुर-गण ॥
रखें न आपस में हम अनबन !!!
इस पर अपना सब कुछ वारें ।
मिल--जुलकर हम देश सँवारें ॥

— ४ —

सबको अपना भाई मानें !
'पुत्र एक माँ के हैं' जानें ॥
एक दूसरे को पहिचानें !!!
हिल मिल कर दुश्मन को मारें !
मिल-जुलकर हम देश सँवारें ॥

— ५ —

हम आपस की फूट मिटायें !
हम न कभी भी लूट मचायें !!
स्वतन्त्रता का लाभ--उठायें !!!
'ज़य--भारत' हम यही पुकारें !
मिल-जुलकर हम देश सँवारें ॥



भारत - मां की जय - जय ?

सब आज कहो भारत-माँ की जय--जय !
'जय-हिन्द' कहो नेताजी की जय--जय ॥

भर गई गोद माँ की जो बहुत दिनों से थी खाली !
दीप लिए आज़ादी की नाचेंगे दे दे ताली ॥

तलवारों के दिन बीत गये मंगल मय दिन आये !
मिटे गुलामी के दुख सारे आओ मोद मनायें ॥

हुआ अब स्वर्ण-विहान कहो जय-जय !
सब आज कहो भारत--मां की जय--जय ॥

बंधन की कड़ियां टूट गईं और मिली आज़ादी !
आओ आज प्रतिज्ञा करलें पहिनेंगे हम खादी !!

यह अगस्त की पन्द्रहवीं तिथि हम न कभी भी भूलें ।
रंग--रंगीले सावन-ऋतु में आओ झूला झूलें ॥

पाया फिर गौरव-मान कहो जय--जय !
सब आज कहो भारतमां की जय--जय ॥

पर्वत--राज हिमालय भी तो आज बहुत हरषाया ।
पा आजादी मगन हुआ वह फूला नहीं समाया ॥

सदियों के ही बाद मिली है आज हमें आज़ादी ।
अपने हाथों हम न करेंगे अपनी ही बरबादी ॥

ऐ वीरो सीना तान कहो जय--जय ।
सब आज कहो भारत-मां की जय--जय ॥
संघर्ष नहीं संग्राम नहीं तलवार नहीं होगी ।
इस बार हमारी आँखों में जल धार नहीं होगी ॥
हम अब तक थे पर-वश गुलाम अब हार नहीं होगी ।
अपने ही घर में औरों की तलवार नहीं होगी ॥
भारत के लाल जवाहर की जय--जय ।
सब आज कहो 'भारत-मां' की जय--जय ॥



झंडा ऊंचा रहे हमारा !

इसका मान बढ़ाओ प्यारे !
इसको गले लगाओ प्यारे ॥
इससे सब दुश्मन हैं हारे !!!
सब देशों से है यह न्यारा !
झंडा ऊंचा रहे हमारा ॥

सदा सत्य संग्राम करेंगे !
हम न जरा आराम करेंगे ॥
नहीं किसी से कभी डरेंगे !!!
चाहे प्राण रहे न हमारा !
झंडा ऊंचा रहे हमारा ॥

स्वतन्त्रता के हेतु लड़ेंगे !
ऐसा कौतुक नया रचेंगे ॥
दुश्मन लखकर दंग रहेंगे !!!
होगा जग में नाम हमारा !
झंडा ऊंचा रहे हमारा ॥

भारत--माता की जय बोलो !
ऐक्य-प्रेम का मधु-- रस घोलो ॥
गाँधी-- जी के पथ पर होलो ॥।
इस पर हमने तन--मन वारा ।
झंडा ऊंचा रहे हमारा ॥



मकतबा जामिआ लिमिटेड देहली

मुद्रक—जय्यद बरकी प्रेस, देहली।